''मीठे बच्चे – लक्ष्य को सदा सामने रखो तो दैवीगुण आते जायेंगे। अब अपनी सम्भाल करनी है, आसुरी गुणों को निकाल दैवीगुण धारण करने हैं''

प्रश्नः- आयुश्चान भव का वरदान मिलते हुए भी बड़ी आयु के लिए कौन-सी मेहनत करनी है?

उत्तरः- बड़ी आयु के लिए तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की मेहनत करो। जितना बाप को याद करेंगे उतना सतोप्रधान बनेंगे और आयु बड़ी होगी फिर मृत्यु का डर निकल जायेगा। याद से दु:ख दूर हो जायेंगे। तुम फूल बन जायेंगे। याद में ही गुप्त कमाई है। याद से पाप कट जाते हैं। आत्मा हल्की हो जाती है, आयु बड़ी हो जाती है।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) महान् आत्मा बनने के लिए अपवित्रता की जो भी गंदी आदतें हैं, वह मिटा देनी है। दु:ख देना, लड़ना-झगड़ना... यह सब अपवित्र कर्त्तव्य हैं जो तुम्हें नहीं करने हैं। अपने आपको राजतिलक देने का अधिकारी बनाना है।

2) बुद्धि को सब गोरखधन्धों से, देहधारियों से निकाल खुशबूदार फूल बनना है। गुप्त कमाई जमा करने के लिए चलते-फिरते अशरीरी रहने का अभ्यास करना है।

वरदान:- अपने शुभ-चिंतन की शक्ति से आत्माओं को चिंता मुक्त बनाने वाली शुभचिंतक मणी भव

आज के विश्व में सब आत्मायें चिंतामणी हैं। उन चिंता मणियों को आप शुभचिंतक मणियां अपने शुभ-चिंतन की शक्ति द्वारा परिवर्तन कर सकते हो। जैसे सूर्य की किरणें दूर-दूर तक अंधकार को मिटाती हैं ऐसे आप शुभचिंतक मणियों की शुभ संकल्प रूपी चमक वा किरणें विश्व में चारों ओर फैल रही हैं इसलिए समझते हैं कि कोई स्प्रीचुअल लाइट गुप्त रूप में अपना कार्य कर रही है। यह टचिंग अभी शुरू हुई है, आखरीन ढूंढते-ढूंढते स्थान पर पहुँच जायेंगे।

स्लोगन:- बापदादा के डायरेक्शन को क्लीयर कैच करने के लिए मन-बुद्धि की लाइन क्लीयर रखो।

''मीठे बच्चे – अब तुम्हें सम्पूर्ण बनना है क्योंकि वापिस घर जाना है और फिर पावन दुनिया में आना है''

प्रश्नः- सम्पूर्ण पावन बनने की युक्ति कौन सी है?

उत्तरः- सम्पूर्ण पावन बनना है तो पूरा बेगर बनो, देह सहित सब सम्बन्धों को भूलो और मुझे याद करो तब पावन बनेंगे। अब तुम इन आँखों से जो कुछ देखते हो यह सब विनाश होना है इसलिए धन, सम्पत्ति, वैभव आदि सब भूल बेगर बनो। ऐसे बेगर ही प्रिन्स बनते हैं।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) अब नाटक पूरा हो रहा है, हमें वापिस जाना है इसलिए आत्मा को बाप की याद से सतोप्रधान, पावन जरूर बनाना है। बाप समान ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर अभी ही बनना है।

2) इस देह से भी पूरा बेगर बनने के लिए बुद्धि में रहे कि इन आँखों से जो कुछ भी देखते हैं, यह सब खत्म हो जाना है। हमें बेगर से प्रिन्स बनना है। हमारी पढ़ाई है ही नई दुनिया के लिए।

वरदानः- चमत्कार दिखाने के बजाए अविनाशी भाग्य का चमकता हुआ सितारा बनाने वाले सिद्धि स्वरूप भव

आजकल जो अल्पकाल की सिद्धि वाले हैं वह लास्ट में ऊपर से आने के कारण सतोप्रधान स्टेज के प्रमाण पवित्रता के फलस्वरूप अल्पकाल के चमत्कार दिखाते हैं लेकिन वह सिद्धि सदाकाल नहीं रहती क्योंकि थोड़े समय में ही सतो रजो तमो तीनों स्टेजेस से पास करते हैं। आप पवित्र आत्मायें सदा सिद्धि स्वरूप हैं, चमत्कार दिखाने के बजाए चमकती हुई ज्योति स्वरूप बनाने वाले हैं। अविनाशी भाग्य का चमकता हुआ सितारा बनाने वाले हैं, इसलिए सब आपके पास ही अंचली लेने आयेंगे।

स्लोगनः- बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे।

''मीठे बच्चे – बाप उस रथ में आते हैं, जिसने पहले-पहले भक्ति शुरू की, जो नम्बरवन पूज्य था फिर पुजारी बना है, यह राज़ सबको स्पष्ट करके सुनाओ''

प्रश्नः- बाप अपने वारिस बच्चों को कौन-सा वर्सा देने आये हैं?

उत्तरः- बाप सुख, शान्ति, प्रेम का सागर है। यही सारा खजाना वह तुम्हें विल करते हैं। ऐसा विल कर देते जो 21 जन्म तक तुम खाते रहो, खुट नहीं सकता। तुम्हें कौड़ी से हीरे जैसा बना देते हैं। तुम बाप का सारा खजाना योगबल से लेते हो। योग के बिना खजाना नहीं मिल सकता है।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) ऊँच पद पाने के लिए पूरा फॉलो फादर करना है। सब कुछ बाप के हवाले कर ट्रस्टी हो सम्भालना है, पूरा वारी जाना है। खान-पान, रहन-सहन बीच का साधारण रखना है। न बहुत ऊँच, न बहुत नींच।

2) बाप ने जो सुख-शान्ति, ज्ञान का खजाना विल किया है, उसे दूसरों को भी देना है, कल्याणकारी बनना है।

वरदानः- पवित्रता की गुह्यता को जान सुख-शान्ति सम्पन्न बनने वाली महान आत्मा भव

पवित्रता के शक्ति की महानता को जान पवित्र अर्थात् पूज्य देव आत्मायें अभी से बनो। ऐसे नहीं कि अन्त में बन जायेंगे। यह बहुत समय की जमा की हुई शक्ति अन्त में काम आयेगी। पवित्र बनना कोई साधारण बात नहीं है। ब्रह्मचारी रहते हैं, पवित्र बन गये हैं... लेकिन पवित्रता जननी है, चाहे संकल्प से, चाहे वृत्ति से, वायुमण्डल से, वाणी से, सम्पर्क से सुख-शान्ति की जननी बनना – इसको कहते हैं महान आत्मा।

स्लोगनः- ऊँची स्थिति में स्थित हो सर्व आत्माओं को रहम की दृष्टि दो, वायब्रेशन फैलाओ।

''मीठे बच्चे – पहले हर एक को यह मन्त्र कूट-कूट कर पक्का कराओ कि तुम आत्मा हो, तुम्हें बाप को याद करना है, याद से ही पाप कटेंगे''

प्रश्नः- सच्ची सेवा क्या है, जो तुम अभी कर रहे हो?

उत्तरः- भारत जो पतित बन गया है, उसे पावन बनाना – यही सच्ची सेवा है। लोग पूछते हैं तुम भारत की क्या सेवा करते हो? तुम उन्हें बताओ कि हम श्रीमत पर भारत की वह रूहानी सेवा करते हैं जिससे भारत डबल सिरताज बनें। भारत में जो पीस प्रास्पर्टी थी, उसकी हम स्थापना कर रहे हैं।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए अन्दर बाबा-बाबा की उछल आती रहे। हठ से नहीं, रुचि से बाप को चलते-फिरते याद करो। बुद्धि सब तरफ से हटाकर एक में लगाओ।

2) जैसे बाप प्यार का सागर है, ऐसे बाप समान प्यार का सागर बनना है। सब पर उपकार करना है। बाप की याद में रहना और सबको बाप की याद दिलाना है।

वरदानः- शान्ति की शक्ति के साधनों द्वारा विश्व को शान्त बनाने वाले रूहानी शस्त्रधारी भव

शान्ति की शक्ति का साधन है शुभ संकल्प, शुभ भावना और नयनों की भाषा है। जैसे मुख की भाषा द्वारा बाप का वा रचना का परिचय देते हो, ऐसे शान्ति की शक्ति के आधार पर नयनों की भाषा से नयनों द्वारा बाप का अनुभव करा सकते हो। स्थूल सेवा के साधनों से ज्यादा साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है। रूहानी सेना का यही विशेष शस्त्र है – इस शस्त्र द्वारा अशान्त विश्व को शान्त बना सकते हो।

स्लोगनः- निर्विघ्न रहना और निर्विघ्न बनाना – यही सच्ची सेवा का सबूत है।

''मीठे बच्चे – निरन्तर याद रहे कि हमारा बाबा, बाप भी है, टीचर भी है तो सतगुरू भी है, यह याद ही मनमनाभव है''

प्रश्नः- माया की धूल जब आँखों में पड़ती है तो सबसे पहली गफ़लत कौन-सी होती है?

उत्तरः- माया पहली गफ़लत कराती जो पढ़ाई को ही छोड़ देते। भगवान् पढ़ाते हैं, यह भूल जाता है। बाप के बच्चे ही बाप की पढ़ाई को छोड़ देते हैं, यह भी वन्डर है। नहीं तो नॉलेज ऐसी है जो अन्दर ही अन्दर खुशी में नाचते रहें, परन्तु माया का प्रभाव कोई कम नहीं है। वह पढ़ाई को ही छुड़ा देती है। पढ़ाई छोड़ी माना अबसेन्ट हुए।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) इन आँखों से जो कुछ दिखाई देता है, उनसे ममत्व मिटाना है, एक बाप को ही देखना है। वृत्ति को शुद्ध बनाने के लिए इन छी-छी शरीरों की तरफ जरा भी ध्यान न जाये।
2) बाप जो न्यारी और सत्य नॉलेज सुनाते हैं, वह अच्छी तरह पढ़नी और पढ़ानी है। पढ़ाई कभी मिस नहीं करनी है।

वरदानः- शान्ति की शक्ति के प्रयोग द्वारा हर कार्य में सहज सफलता प्राप्त करने वाले प्रयोगी आत्मा भव

अब समय के परिवर्तन प्रमाण शान्ति की शक्ति के साधन प्रयोग में लाकर प्रयोगी आत्मा बनो। जैसे वाणी द्वारा आत्माओं में स्नेह के सहयोग की भावना उत्पन्न करते हो ऐसे शुभ भावना, स्नेह की भावना की स्थिति में स्थित हो उन्हों में श्रेष्ठ भावनायें उत्पन्न करो। जैसे दीपक, दीपक को जगा देता है ऐसे आपकी शक्तिशाली शुभ भावना औरों में सर्वश्रेष्ठ भावना उत्पन्न करा देगी। इस शक्ति से स्थूल कार्य में भी बहुत सहज सफलता प्राप्त कर सकते हो, सिर्फ प्रयोग करके देखो।

स्लोगनः- सर्व का प्यारा बनना है तो खिले हुए रूहानी गुलाब बनो, मुरझाओ नहीं।

मीठे बच्चे – ''मायाजीत बनने के लिए गफ़लत करना छोड़ो, दु:ख देना और दु:ख लेना – यह बहुत बड़ी गफ़लत है, जो तुम बच्चों को नहीं करनी चाहिए''

प्रश्नः- बाप की हम सब बच्चों के प्रति कौन-सी एक आश है?

उत्तरः- बाप की आश है कि मेरे सभी बच्चे मेरे समान एवर प्योर बन जायें। बाप एवर गोरा है, वह आया है बच्चों को काले से गोरा बनाने। माया काला बनाती, बाप गोरा बनाते हैं। लक्ष्मी-नारायण गोरे हैं, तब काले पतित मनुष्य जाकर उनकी महिमा गाते हैं, अपने को नीच समझते हैं। बाप की श्रीमत अब मिलती है – मीठे बच्चे, अब गोरा सतोप्रधान बनने का पुरूषार्थ करो।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) यह टाइम मोस्ट वैल्युबल है, इसमें ही पुरूषार्थ कर बाप पर पूरा वारी जाना है। दैवी गुण धारण करने है। कोई प्रकार की गफ़लत नहीं करनी है। एक बाप की मत पर चलना है।

2) एम आब्जेक्ट को सामने रख बहुत खबरदारी से चलना है। आत्मा को सतोप्रधान पवित्र बनाने की मेहनत करनी है। अन्दर में जो भी दाग़ हैं, उन्हें जांच कर निकालना है।

वरदान:- ब्राह्मण जीवन में हर सेकण्ड सुखमय स्थिति का अनुभव करने वाले सम्पूर्ण पवित्र आत्मा भव

पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। किसी भी प्रकार की अपवित्रता दु:ख अशान्ति का अनुभव कराती है। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर सेकण्ड सुखमय स्थिति में रहने वाले। चाहे दु:ख का नज़ारा भी हो लेकिन जहाँ पवित्रता की शक्ति है वहाँ दु:ख का अनुभव नहीं हो सकता। पवित्र आत्मायें मास्टर सुख कर्ता बन दु:ख को रूहानी सुख के वायुमण्डल में परिवर्तन कर देती हैं।

स्लोगन:- साधनों का प्रयोग करते साधना को बढ़ाना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति है।

''शुभ भाव और प्रेम भाव को इमर्ज कर क्रोध महाशत्रु पर विजयी बनो''

- आज बापदादा अपने जन्म के साथियों को, साथ-साथ सेवा के साथियों को देख हर्षित हो रहे हैं।
- बापदादा सभी बच्चों को यही रिवाइज करा रहे हैं कि सदा बाप की कम्पनी में रहो। बापदादा ऑफर कर रहे हैं – जब सर्व सम्बन्ध ऑफर कर रहे हैं तो सर्व सम्बन्धों का सुख लो। सम्बन्धों को कार्य में लगाओ।
- आज बापदादा सभी से यह गिफ्ट लेने चाहते हैं कि क्रोध तो छोड़ो लेकिन क्रोध का अंश मात्र भी नहीं रहे। क्यों? क्रोध में आकर डिस-सर्विस करते हैं क्योंकि क्रोध होता है दो के बीच में तो दिखाई देता है। क्रोध महाशत्रु गाया हुआ है। शुभ भाव, प्रेम भाव वह इमर्ज नहीं होता है।
- बापदादा रिटर्न सौगात में यह विशेष सभी को वरदान दे रहे हैं – जब भी गलती से भी, न चाहते हुए भी कभी क्रोध आ भी जाए तो सिर्फ दिल से ''मीठा बाबा'' शब्द कहना, तो बाप की एक्स्ट्रा मदद हिम्मत वालों को अवश्य मिलती रहेगी।

वरदान:- पवित्रता की शक्तिशाली दृष्टि वृत्ति द्वारा सर्व प्राप्तियाँ कराने वाले दु:ख हर्ता सुख कर्ता भव

साइंस की दवाई में अल्पकाल की शक्ति है जो दु:ख दर्द को समाप्त कर लेती है लेकिन पवित्रता की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति में तो दुआ की शक्ति है। यह पवित्रता की शक्तिशाली दृष्टि वा वृत्ति सदाकाल की प्राप्ति कराने वाली है इसलिए आपके जड़ चित्रों के सामने ओ दयालू, दया करो कहकर दया वा दुआ माँगते हैं। तो जब चैतन्य में ऐसे मास्टर दु:ख हर्ता सुख कर्ता बन दया की है तब तो भक्ति में पूजे जाते हो।

स्लोगन:- समय की समीपता प्रमाण सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य।